कक्षा **-9** दिनांक**-20/07/21**

प्रायद्वीपीय पठार**-**

7- दक्षिण का पठार एक त्रिभुजाकार भूभाग है, जो नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है|
8- उत्तर में इसके चौड़े आधार पर सतपुड़ा की श्रृंखला है, जबकि महादेव, कैमूर की पहाड़ी तथा मैकाल श्रृंखला इसके पूर्वी विस्तार हैं|
9- दक्षिण का पठार पश्चिम में ऊंचा एवं पूर्व की ओर कम ढाल वाला है इस पठार का एक भाग उत्तर पूर्व में भी देखा जाता है जिसे स्थानीय रूप से 'मेघालय', 'कार्बी एंगलोंग पठार' तथा 'उत्तर कचार पहाड़ी' के नाम से जाना जाता है| यह एक भ्रंश द्वारा छोटा नागपुर पठार से अलग हो गया है| पश्चिम से पूर्व की ओर तीन महत्वपूर्ण श्रृंखलाएं गारो, खासी तथा जयंतिया हैं|
पूर्वी तथा पश्चिमी घाट**-**

10- दक्षिण के पठार के पूर्वी एवं पश्चिमी सिरे पर क्रमशः पूर्वी तथा पश्चिमी घाट स्थित हैं|
11- घाट पश्चिमी तट के समानांतर स्थित है व्यस्त हैं तथा उन्हें केवल दलों के द्वारा ही पार किया जा सकता है |भारत के भौतिक मानचित्र में आप थालघाट, भोर घाट तथा पालघाट की स्थिति ज्ञात कर सकते हैं|
12- पश्चिमी घाट पूर्वी घाट के अपेक्षा ऊंचे हैं| पूर्वी घाट के 600 मीटर की औसत ऊंचाई की तुलना में पश्चिमी घाट की ऊंचाई 900 से 1600 मीटर है |
13- पूर्वी घाट का विस्तार सतत नहीं है | यह अनियमित हैं एवं बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों ने इनको काट दिया है| पश्चिमी घाट में पर्वतीय वर्षा होती है| यह वर्षा घाट के पश्चिमी ढाल पर आद्र हवा के टकराकर ऊपर उठने के कारण होती है|
14- पश्चिमी घाट को विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है |पश्चिमी घाट की ऊंचाई उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ती जाती है| इस भाग के शिखर ऊंचे हैं, जैसे-अनाईमुडी(2695 मीटर), डोडा बेटा(2 633 मीटर)|